रविवार, दिनाँक **05-03-2023** को सत्संग में हुए वचनों का संक्षिप्त विवरण

जल्दी मिला दे बलधार, ओ दिल मंगे नाथ कीते।।

महाबीर जी दे चरणां नू धो धो पीवां, सांवला मिलादे बलधार।

ओ दिल मंगे नाथ कीते, जल्दी मिलादे बलधार।।

राम लक्ष्मण नू तिलक लगावां, लक्ष्मण शेष दा अवतार।

ओ दिल मंगे नाथ कीते, जल्दी मिलादे बलधार।।

रघुनाथ जी दे चरणां विच महारानी सोहवे, मांग भरेंदी संवार।

ओ दिल मंगे नाथ कीते, जल्दी मिलादे बलधार।।

रघुनाथ जी दे गल विच फुलां दी माला, नाल सोहवन बलधार।

ओ दिल मंगे नाथ कीते, जल्दी मिलादे बलधार।।

ऋषि मुनि अन्त पा न सकन, रस्ता बताया बलधार।

ओ दिल मंगे नाथ कीते, जल्दी मिलादे बलधार।।

रल मिल भैणों महाबीर जी दी शरणी आओ, महाबीर जी दा रघुनाथ जी दे नाल प्यार।

ओ दिल मंगे नाथ कीते, जल्दी मिलादे बलधार।।

सोहणे मन्दिरां विच सांवले साजन, भज लौ राम बलधार।

ओ दिल मंगे नाथ कीते, जल्दी मिलादे बलधार।।

मैं दासी तुहाडे चरणां विच राहवां, महाबीर जी रघुनाथ मिलावन हार।

ओ दिल मंगे नाथ कीते, जल्दी मिलादे बलधार।।

सजनों हम मानते हैं कि आपने इस भजन का एक-एक शब्द ध्यान से सुना होगा और हर शब्द के अर्थ को अपने जीवन का अर्थ बनाने का संकल्प ले लिया होगा। सब की जानकारी हेतु इस भजन के अन्तर्गत सच्चेपातशाह जी के निर्मल प्रेम की अभिव्यक्ति है। जानते हो उनका यह निर्मल प्रेम किस के प्रति रहा? उनकी सुरत का यह निर्मल प्रेम परमात्मा यानि शब्द के संग रहा। इस सन्दर्भ में सजनों जब सजन श्री शहनशाह हनुमान जी का संग कर, प्रेम निर्मल रूप धारण कर लेता है तो सुरत के मन में शब्द संग मिलन का भाव तीव्रता से जाग्रत हो जाता है। इसी प्रकार जब सच्चेपातशाह जी ने भक्त शिरोमणि सजन श्री शहनशाह हनुमान जी का संग प्राप्त कर उन द्वारा दर्शायी व समझाई विचारधारा पर अटलता से बने रह सद्मार्ग पर प्रशस्त होने का पराक्रम दिखाया तो उनका बहिर्मुखी ख़्याल अन्तर्मुखी हो गया। ख़्याल के अन्तर्मुखी होते ही अन्तर्घट में शोभित परमात्मा भासित हो गया। ऐसा होने पर उनकी सुरत सजन श्री शहनशाह हनुमान जी के आगे प्रार्थना करने लगी कि मुझ सुरत का शब्द संग मेल करा दो। जानो यह अटल सुहागिन होकर प्रभु संग प्रभु हो प्रभुमय होने की मंगलकारी बात है। ऐसा होने पर ही वह कह उठती हैः-

रघुनाथ जी दे चरणां विच महारानी सोहवे, मांग भरेंदी संवार

ओ दिल मंगे नाथ कीते, जल्दी मिलादे बलधार।

इससे सजनों स्पष्ट होता है कि यह सुरत के अपने सच्चे घर पहुँच इलाही शान का अनुभव करते हुए अपना आगामी जीवन आनन्दमय बनाने का शुभ संकल्प है। जानो जब किसी के भी अन्दर ऐसा करने के प्रति प्रबल इच्छा जाग्रत हो जाती है तो उसके अन्दर फिर इस जगत से कुछ भी प्राप्त करने की आवश्यकता नहीं रहती। इसीलिए तो वह सजन फिर उस प्राप्ति हेतु अनथक परिश्रम दिखाने से भी नहीं सकुचाता और अपनी दिनचर्या का समय इसी कार्य की सिद्धि के प्रति समर्पित कर देता है। आशय यह है कि फिर उसका दिल जगत के आकर्षणों में नहीं उलझता और वह अपने ख़्याल को अपने सच्चे घर में स्थित रखता हुआ इलाही स्वरूप का दर्शन पाने हेतु लालायित हो उठता है।

सो इस भजन के द्वारा सच्चेपातशाह जी समस्त कलुकालवासियों को बता रहे हैं कि हमें यह रास्ता बलधारी जी ने बताया है। अतः आप भी इस तथ्य से सीख लेकर अपने मन में उनका संग प्राप्त करने की चाहना उत्पन्न करो। इस हेतु सर्वप्रथम आत्म-निरीक्षण करो कि हम सजन श्री शहनशाह हनुमान जी के वचनों अनुरूप स्थिरता से अपना जीवन यापन कर रहे हैं या नहीं? इस सन्दर्भ में यदि उत्तर न में प्राप्त हो तो आपको यह समर्थता धारण

करनी है ताकि सुरत और शब्द का मिलन हो। यहाँ सजनों याद रखना है कि अटल सुहागिन होने का अर्थ होता है - अजर अवस्था को प्राप्त होना यानि ज्योति नाल जोत हो जाना और इस तरह मृतलोक पर विजय प्राप्त कर परमधाम पहुँच विश्राम को पाना। जानो सजनों यह मानव के लिए सबसे उत्तम प्राप्ति है क्योंकि जब यह उत्तमता हमारे भाव स्वभावों में उतरती है तो हमारा यथार्थ अलौकिक स्वरूप निखर कर सामने आ जाता है और अपने इस धर्म को, कि मानव होने के नाते मेरा क्या धर्म है, सत्यता से पहचान जाते हैं। फिर सत्यनिष्ठा से उस धर्म पर स्थिर रहते हुए अपना जीवनयापन करना कठिन प्रतीत नहीं होता यानि हमारी सोच, हमारा विचार, हमारी बातचीत, हमारा कर्म सब धर्मानुकूल हो जाता है। इस तरह हम सजन श्री शहनशाह हनुमान जी द्वारा प्रदत्त युक्ति पर स्थिरता से बने रहते हुए दुनियाँ से आज़ाद हो जाते हैं और निष्पाप जीवन व्यतीत करते हैं। आशय यह है कि तब हमारे अन्दर सुकर्मों का राज हो जाता है और हम कर्मगति से आज़ाद हो ईश्वरीय आज्ञा की पालना के निमित्त अपना जीवन/मन-वचन-कर्म समर्पित कर देते हैं। सजनों हमें इसी अवस्था को प्राप्त करना है और फिर सुदृढ़ता से उसी अवस्था में डटे रहना है। यहाँ याद रखो ऐसा तभी हो पाएगा जब हमारा जगत के प्रति नज़रिया समभाव अनुकूल होगा और हम समदृष्टि हो जाएँगे। बस फिर कोई वैरी दुश्मन नहीं रहेगा अपितु सब सजन हो जाएँगे यानि हम भी सजन, तुम भी सजन। ऐसा होने पर आत्मीयता अनुसार सबके साथ एकभाव होकर विचरोगे और अपनी शरीर रूपी मशीनरी का भरपूर प्रयोग कर पाओगे और कह उठोगेः-

सजन है आत्मा, श्री साजन है परमात्मा

हमें समझ नहीं आती कि इस तथ्य को समझने में आपको दिक्कत कहाँ आती है? सजनों जीवन ऐसे ही सोचों में मत बिताओ अपितु समझदार बनो और अपने आत्म स्वरूप को पहचान लो ताकि साजन परमेश्वर आपको स्वीकार लें। चलो अब मिलकर बोलोः-

अपना आप पछानना, रघुवर साडे अन्दर वसदा।

रघुवर साडे अन्दर वसदा, रघुवर साडे अन्दर वसदा।।

उसे दा हिवे चानणा, सजन अपने घर विच वसदा।

कौन है वैरी कौन है शत्रु किस नू दुश्मन जानना, रघुवर साडे अन्दर वसदा।।

उसे दा हिवे चानणा, सजन अपने घर विच वसदा।

कौन हंकारी, कौन अभिमानी किस ने शोर हुन पावना, रघुवर साडे अन्दर वसदा।।

उसे दा हिवे चानणा, सजन अपने घर विच वसदा।

कौन कुसंगी कौन लफंगा किस नूं चोर हुण जानना, रघुवर साडे अन्दर वसदा।।

उसे दा हिवे चानणा, सजन अपने घर विच वसदा।

कौन है रोगी, कौन है भोगी किस नूं हुण सतावना, रघुवर साडे अन्दर वसदा।।

उसे दा हिवे चानणा, सजन अपने घर विच वसदा।

कौन है ब्राह्मण, कौन है क्षत्री — वैश्य शूद्र किस नूं जानना, रघुवर साडे अन्दर वसदा।।

उसे दा हिवे चानणा, सजन अपने घर विच वसदा।

सजनों जिस तरह हर कीर्तन/भजन में कुदरत का एक महत्त्वपूर्ण सन्देश निहित होता है, इसी तरह इस कीर्तन में भी बहुत बड़ा सन्देश निहित है। हमें इस सन्देश को अफुरता से समझना है और फिर अपने जीवन में उतारना है। अब ध्यान से सुनो कि यह कीर्तन हमें क्या समझा रहा है - जानो इस कीर्तन के अन्तर्गत सच्चेपातशाह जी हमें एक ही वाक्य में जीव, जगत और ब्रह्म की परिभाषा समझा रहे हैं ताकि हम किसी भी ऐसे इन्सान के वश में न आएँ जो हमें अपने प्रभुत्व में ले ले। जानो वह कह रहे हैं कि हे मानव, इस सत्य को तूँ मान कि ईश्वर/परमात्मा का वास तेरे अन्दर ही है। अतः बेकार में उसे बाहर ढूँढने की कोशिश मत कर क्योंकि इस प्रयास से वह तुझे कदाचित नहीं मिलने वाला। इस हेतु तो तुझे अन्तर्ध्यान होना होगा और अन्तर्ध्यान होने पर जो मति आए उस मति अनुसार संसार में विचरना होगा।

अब यह कैसे सम्भव हो सकता है, इस हेतु वह कहते हैं कि हे इन्सान, तूं पहले यह मान कि रघुवर या परमात्मा तेरे अन्दर ही बसता है। फिर इस सत्य को मान कि सजन अपने घर में वसदा है अर्थात सजन जोकि ओ३म् अमर आत्मा है वह उससे विलग नहीं अपितु उसी में रहती है अर्थात उसी के प्रकाश से प्रकाशित होती है। आगे जान कि जगत के खेल को व्यवस्थित ढंग से चलाने के लिए वह परमात्मा अपनी ही आत्मा को भिन्न-भिन्न शरीरों में

बन्धनमान करके इस जगत को हरकत में ले आते हैं और इस तरह यह जगत क्रियाशील हो उठता है। अतः अब जो इस शरीरबद्ध आत्मा के लिए कुदरत का विधान है उस विधान को जानना है और इस सत्य को दिल से मानना है कि सजन अपने घर में ही वसदा है। यहाँ अपने घर से तात्पर्य निज परमात्म स्वरूप में स्थित बने रहने से है। इस तरह स्थित रहने से यह बोध हो जाता है कि दोनों में पारस्परिक भिन्न-भेद नहीं है।

सो सजनों इस कीर्तन की मात्र दो पंक्तियों को बड़े ध्यान से समझना है। पहली पंक्ति है - 'रघुवर साडे अन्दर वसदा' जिसे अन्तर्ध्यान होकर जानना है और फिर मनसिक तौर पर 'ईश्वर है अपना आप' के विचार पर खड़ा होना है। दूसरी पंक्ति है - 'सजन अपने घर विच वसदा' अर्थात सजन आत्मा का वास सदा अपने घर में यानि हर क्षण, हर पल परमात्मा में रहना चाहिए। अतः सतर्क रहना है कि हमारा ख़्याल किसी विध् भी जगत की ओर न जाए क्योंकि यदि एक बार ऐसा हो गया यानि हमारा ख़्याल उसमें उलझ गया तो फिर वह अन्तर्ध्यान होने की बजाए जगत में अटक जाएगा। अब यह तो आप जानते ही हो कि ख़्याल की उड़ान यानि गति कितनी तीव्र है। एक ही क्षण में बिना किसी मशीनरी या पहिए के आकाशों-आकाश, पातालों-पाताल चला जाता है और वहाँ के वातावरण का अनुभव करने लग जाता है। जानो यह कुदरती साईंस का वह खेल है जहाँ भौतिक साईंस कभी नहीं पहुँच सकती। सो ख़्याल के लिए जो विधान कुदरत ने निश्चित कर रखा है वह है कि यह सदा अपने घर में ही रहे। आपने सजनों इस विधान को भली-भान्ति समझना है ताकि आप अन्तर्जगत की वास्तविकता को जान सको। जानो जो इस विधान अनुसार अन्तर्घट में स्थित रहता है, वह अपने भीतर निहित परमात्मा की गुण-शक्तियों का आभास करने लग जाता है। इन शक्तियों का एहसास होते ही फिर वह जो भी धारण करता है, वहीं से धारण करता है। फिर उसकी भाव-भावना व स्वभाव वैसा ही बनता है। इस तरह हम कह सकते हैं कि हमारे स्वभाव का आधार यानि उसकी आत्मा -- भाव है जिसे आत्मभाव कहते हैं। अन्य शब्दों में भाव ही स्वभाव का आधार होता है। अब यह भाव नकारात्मक भी हो सकता है और सकारात्मक भी हो सकता है। सात्विक भी हो सकता है और राजसिक व तामसिक भी हो सकता है। इसीलिए कुदरती वेद-शास्त्र कहते हैं कि हे मानव, अपने ख़्याल को सदा परम-तत्त्व में लीन रख और सजनता का प्रतीक बन जा। जान, इसके अतिरिक्त सजनता का प्रतीक बनने की अन्य कोई युक्ति नहीं है। अपने घर स्थित सुरत ही उस परमात्मा का अन्त पा सकती है और कह सकती हैः-

बेअन्त, बेअन्त, बेअन्त गुसाईं, तेरा अन्त होवे तां अन्त मैं पाईं

यहाँ सजनों जानो कि जब मैं आत्मा सजनता का प्रतीक बन जाती हूँ तो शान्त हो जाती हूँ क्योंकि तब मैं अपने स्वाभाविक रूप से परमात्मा के ज्ञान को प्रकाशित कर पाती हूँ। इस महत्ता के दृष्टिगत बार-बार कहा जाता है कि जो भी दुनियाँ से प्राप्त हुआ है उसे भूलकर केवल अपने ख़्याल को ध्यानपूर्वक उस परमात्मा संग जोड़े रखो और फिर उसकी विचारधारा को धारण कर अपने व्यवहार में उतारो व निष्पाप इस जगत में विचरो। जानो इसी तरह इस मृतलोक पर फतह पा सकते हो यानि मृत्यु का भाव आपकी यादगीरी से निकल सकता है और आप अमरता का भान कर सकते हो। अब आपको समझ आया कि जो परमतत्त्व है उसी में उस आत्मा का वास है और वहीं से वो शक्ति प्राप्त कर वह इस जगत में विचरता है। यह सतयुग का चलन है। सतयुगी इन्सान ऐसे ही होते हैं। इसीलिए सतवस्तु के कुदरती ग्रन्थ में कहा गया है कि सतयुग में सच्चाई-धर्म के दो मन्त्र इन्सान रटते हैं और युवा अवस्था रहती है। अब सारे आज की बात को स्मृति में रखना क्योंकि हम चाहते हैं कि आप यह बात सबको बताने के लायक बनो। इस हेतु सत्संग की बात अपने घर परिवार में बताओ और सबको समझाओ ताकि सब जागृति में आ जाएँ। यहाँ याद रखो कि सच्चेपातशाह जी कहते हैं :-

बाहर दरख़्त पूजन जावें, अपने दरख़्त वल ध्यान न लावें

अर्थात आज का मूर्ख इन्सान अपने मन-मन्दिर की ओर ध्यान न देकर बाहर के मन्दिर-मस्ज़िदों में भटकता फिरता है। सो ऐसा मत करो अपितु इसके स्थान पर अपने मन-मन्दिर की सफाई की ओर ध्यान दो। उसमें गन्दगी के प्रतीक राजसिक और तामसिक गुणों का विकास करने के स्थान पर सतोगुण का विकास करो। जानो यदि ऐसा नहीं किया और अपने अन्दर राजसिक, तामसिक गुण का विकास कर लिया तो 'मैं' जाग्रत हो जाएगी और हमारा मन कामयुक्त हो क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार में फँस जाएगा। इस तरह मानसिक रूप से विक्षिप्त हो जाओगे। अब यह तो सब को पता ही है कि विक्षिप्त यानि पागल इन्सान अपने व सबके लिए विनाशकारी साबित होता है क्योंकि वह विनाशक चीजों को एकत्र करने में ही जुटा रहता है। इस तरह जीवन के अनमोल समय को वह व्यर्थ गँवा देता है और जन्म मरण के चक्कर में फँस जाता है। आपने ऐसा नहीं करना। अब सजनों चैत्र का यज्ञ आने वाला है। यज्ञ पर हमने समझना है कि सतयुग में किसका साम्राज्य होता है।

सतयुग में किसी राजे-महाराजे का साम्राज्य नहीं होता। पूरा विश्व एक ही भारत माता के नाम से जाना जाता है और एकछत्र शासन होता है। हर हृदय में शँख, चक्र, गदा पद्मधारी परमेश्वर प्रगटते हैं - कैसे अब वह ध्यान से सुनोः-

(श्री साजन जी के मुख के शब्द)

शब्दः-

सजनां नूं आप लै आवनगे आप ही अपड़ावनगे, आप करनगे यज्ञ।

सजन श्री शहनशाह हनुमान जी, सजन दयालु श्री रामचन्द्र जी आप ही हो सर्वज्ञ।।

शेषां ते होसन ओ-ओ-ओ-ओ शेषां ते होसन ओ होसन विराजमान लक्ष्मी नारायण चतुर्भुजधारी।

दर्शन पावनगे ऐ-ऐ-ऐ दर्शन पावनगे सारे सजन नर नारी।

ओही ओही, आहा हा, ओही ओही, आहा हा हा।।

पीले वस्त्र गल बैजन्ती माला, सिर ते ताज कमर सजे दुशाला।

हीरे लाल रत्नां चमकनगे ऐ-ऐ-ऐ हीरे लाल रत्नां चमकनगे चमकन लीलाधारी।।

दर्शन पावनगे ऐ-ऐ-ऐ दर्शन पावनगे सारे सजन नर नारी।

ओही ओही, आहा हा, ओही ओही, आहा हा हा।।

हेठां अप्सरा नचन टपन सौहिलड़े गावन, ऊपर परियां झुरमट पावन।

मुरली बजा बजा सुदर्शन चक्र चला चला, चक्र चला रहे ने ऐ-ऐ-ऐ चला रहे खेल खिलाड़ी।

मुरली बजा रहे ने ऐ-ऐ-ऐ चक्र चला रहे ने, चला रहे खेल खिलाड़ी।।

दर्शन पावनगे ऐ-ऐ-ऐ दर्शन पावनगे सारे सजन नर नारी।

ओही ओही, आहा हा, ओही ओही, आहा हा हा।।

शिव ब्रह्मा वी डमरु बजावे, नारद जी दी वीनां तूं तूं करदी जावे।

महाराज जी दे चार चुफेरियों फेरियां लावे, तेतीस करोड़ देवता वी खुशी मनावे।।

खुशी मनावे ओ-ओ-ओ-ओ खुशी मनावे ओ विराट नगरी ओ सारी।

दर्शन पावनगे ऐ-ऐ-ऐ दर्शन पावनगे सारे सजन नर नारी।

ओही ओही, आहा हा, ओही ओही, आहा हा हा।।

महाराज जी पींघां पघूंड़े झूटन, ऊपर चलन फुव्वारे।

चंवर झुलन फुल वर्षन कैसे हो रहे ने नज़ारे।।

खुशी मनावे ओ-ओ-ओ-ओ खुशी मना रहे दयालु श्री रामचन्द्र जगत हितकारी।

दर्शन पावनगे ऐ-ऐ-ऐ दर्शन पावनगे सारे सजन नर नारी।

ओही ओही, आहा हा, ओही ओही, आहा हा हा।।

इस कीर्तन से सजनों समझ आता है कि सतवस्तु का कुदरती ग्रन्थ बार-बार कलुकालवासियों को जागृति में आने हेतु आवाहन दे रहा है कि ख़्याल ध्यान वल व ध्यान प्रकाश वल साधे रखो ताकि अन्तर्घट प्रकाशमान हो जाए। जानो इस युक्ति को अपनाए बगैर ऐसा करना सम्भव नहीं यानि हमारा अन्तर्घट किसी विध् भी प्रकाशमान नहीं हो सकता। ऐसा न हो इस हेतु सजनों युक्ति को अपनाओ और ईश्वर ने हमें जो विवेकशक्ति दी है यानि अच्छा-बुरा जानने की शक्ति दी है उस युक्ति के प्रयोग द्वारा मात्र सत्य को ही ग्रहण करो ताकि हमारी सुरत कँचन अवस्था में सधी रहे और अपने घर में बनी रहे। इसे ही कहते हैं - ख़्याल का अपने घर में वास करना। जो ख़्याल ध्यान द्वारा अपने सच्चे घर में बसा रहता है वही सत्यता को ग्रहण कर पाता है। अब ऐसा करना जिसके स्वभाव के अन्तर्गत हो जाता है यानि उसकी दिनचर्या का अंग बन जाता है, उसको कहीं और भटकने की आवश्यकता ही नहीं रहती और वह सदा मौज-मस्ती यानि आनन्द अवस्था में सधा रहता है। उसके अन्दर किसी विध् भी 'काम' जाग्रत नहीं होता क्योंकि उसे सब प्राप्त रहता है। 'काम' जाग्रत नहीं होता तो क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार भी नहीं सताते। इस तरह वह सदा सुखी रहता है। तो अब हम क्या माने कि आज की सारी बात आप खुद समझकर अपने परिवार के हर सदस्य व जन-जन तक पहुँचाने की समर्थता दर्शाओगे?

'मौन'।

जानो अगर ऐसा करना कठिन लगे तो आज के सबक को दोबारा पढ़ना और फिर भी यदि समझ न आए तो पूछ लेना। ऐसा करने से आपके अन्दर आत्म-विश्वास बढ़ेगा और मन में एक सच्चे सेवक का भाव जाग्रत होगा। जानो सच्चा सेवक बनने पर ही धर्मानुकूल सद्‌परिणाम प्राप्त कर पाओगे।

आप ऐसा करने में कामयाब हों, इन्हीं शुभकामनाओं सहित।